an>

Title: Need to take more steps to stop the fire from spreading from the forest of Uttarakhand.

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): Hon. Speaker Madam, I have given notice for Adjournment Motion and Call Attention Motion on a very bad ecological disaster that is happening in Uttarakhand. As you know, there is no elected Government in Uttarakhand now for reasons best known to BJP and Congress. But Uttarakhand forest fires are raging in large parts of area. Dehradun, Nainital, Chamoli, Tehri are the districts which are affected. Eight people have already died in the forest fires and now I am told that the fire is spreading to parts of Himachal Pradesh and also to parts of Jammu. The danger is that in this fire already 3,000 hectares of forests in Corbett National Park have been destroyed. The Rajaji National Park is also in danger as a result of which every animal from butterflies to lizards and reptiles are dying in this forest fire.

The Central Government has deployed the NDRF, the Army and also the Air Force for helicopters to douse the fire. But in many places, the smoke is so dense that the helicopters cannot fly. Though they are lifting water from Tehri dam and also from Bhimtal lake in Nainital, sometimes they are not being able to go to the fires.

I met somebody who came from Nainital yesterday. He said that NDRF people are just standing there while a fire is raging in front. I am told that the Minister of Home Affairs held a meeting with the Chief Secretary of Uttarakhand yesterday and they are taking some steps. I feel that though 6,000 people are deployed by the Central Government, more efforts need to be made before irreparable damage is done to our forest cover and to our flora and fauna.

HON. SPEAKER: Shri Rajeev Satav and Shri Jagdambika Pal are permitted to associate with the issue raised by Prof. Saugata Roy.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): **सम्माननीय** अध्यक्षा जी, उत्तराखण्ड में जिस तरीके से भयंकर वनाग्नि लगी है, उससे निश्चित रूप में बहुत गहरा संकट वहां पर है। मैं पहले तो गृह मंत्री जी का आभार प्रकट करूंगा कि इस भीÂषण वनाग्नि को देखते हुए उन्होंने कल एक बैठक की है और युद्ध स्तर पर फोर्स को भेज करके नियंत्रण करने की कोशिश की। हमारे वन मंत्री जी भी इस दिशा में निरन्तर कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह सच है कि आधा दर्जन से भी अधिक लोगों की मौत हो गई और हजारों पशु-पक्षी स्वाह हो गये। अरबों-खरबों की वन सम्पदा राख हो गई। इतना ही नहीं, जो तापमान बढ़ रहा है, उससे ग्लेशियर सिकुड़ रहे हैं। यदि ग्लेशियर्स पीछे जाएंगे तो न केवल इस देश को, बल्कि सारी दुनिया को संकट होगा। हमारे वन्य जन्तु जो बाघ है, वह खतरे में है, जो हमारा मोनाल पक्षी, जो राज्य का पक्षी है, वह खतरे में आ गया है। सभी पशु और पक्षी जहां गम्भीर खतरे में आये हैं, वहां मूल्यवान जड़ी-बूटियां, जो जीवनदायिनी जड़ी-बूटियां हैं, वे भी समाप्त हो गई हैं और इधर जो चारे की धरती है, तीन हजार से भी अधिक हैक्टेयर में जिस तरीके से, वैसे तो हमेशा ही आग लगती थी, लेकिन इस समय तापमान बढ़े हुए होने के कारण बहुत तेजी से आग लगी है। इसरो ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 200 से भी अधिक स्थानों पर अभी आग है। हालांकि कल माननीय गृह मंत्री जी के निर्देश पर हैलीकॉप्टर ने 2-3 स्थानों पर लगातार कोशिश की, लेकिन धुंध इस सीमा तक है कि वे हैलीकॉप्टर भी उस सीमा तक काम नहीं कर पा रहे हैं।

मैं आपके माध्यम से यह मांग करना चाहूंगा कि एक हिमनद ग्लेशियर, हिमनद प्राधिकरण का तत्काल गठन हो और सबसे महत्वपूर्ण 12500 वन पंचायतें उत्तराखण्ड की धरती पर पूरी दुनिया में अकेली अद्भुत उदाहरण हैं, जहां पर लाखों लोग अपने प्राणों को हथेली पर रख कर वनों की रक्षा करते हैं, उन लाखों लोगों को तत्काल किस तरीके से ट्रेंड करके इस आग को बुझाने की दिशा में काम किया जा सकता है, यह बहुत जरूरी है। मैं यह भी अनुरोध करूंगा कि केदारनाथ जैसी त्रासदी के बाद मैं गृह मंत्री जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, जिन्होंने कहा था कि हम तत्काल रडार की भी स्थापना करेंगे, ताकि पूर्व में हमको यदि चेतावनी तंत्र की स्थापना होकर सूचना मिलती है, ऐसे यूसेक और इसरो के माध्यम से उन तमाम अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ ऐसे तंत्रों की स्थापना की जाये, ताकि आग की पहले सूचना मिले और उस पर नियंत्रण की पूरी कार्रवाई हो सके। चैतन्य वन इन नैटवर्क रडारों के साथ यदि सुनिश्चित किया जाये तो मैं सोचता हूं कि वहां पर इस भयावह अग्नि को युद्ध स्तर पर रोका जा सकता है। सेना, अर्धसैनिक बल, वायुसेना और एन.डी.आर.एफ., इन सब के प्रति मैं आभारी हूं, लेकिन जिस तरीके से पूरे हिमालय के क्षेत्र में यह आग फैलती जा रही है, इससे कई प्रकार के संकट खड़े होंगे, पर्यावरण प्रदूÂाण होगा, जल स्रोत सूखेंगे, लोगों के गांवों तक भी अब आग आनी शुरू हो गई है। गांव और शहर तक, जिसको नियंत्रण करना बहुत जरूरी है।

13.00 hours

मैं एक बार पुनः माननीय मंत्री जी से भी आग्रह करूंगा कि जिस तरीके से उन्होंने कल बैठक करके इसे युद्ध स्तर पर नियंत्रित करने का निर्देश दिया है, उसी तरह से वे एक बार पुनः पूरा सर्वे करके इस आग को नियंत्रित करें।

महोदया, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।...(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): महोदया, उत्तराखण्ड के साथ-साथ मैं हिमाचल प्रदेश के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : जगदम्बिका जी, आप संबद्ध करें। उन्होंने इस विÂषय के बारे में बोल दिया है।

श्री जगदम्बिका पाल, श्री अनुराग सिंह ठाकुर, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, श्री शरद त्रिपाठी, कुँवर पुष्पÂेन्द्र सिंह चन्देल, श्री चन्द्र प्रकाश जोशी, श्री रोड़मल नागर, श्री पी.पी.चौधरी, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और डॉ. मनोज राजोरिया को डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा उठाए गए विÂाय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह) : उत्तराखण्ड के जंगलों में जो आग लगी है, उसकी जानकारी मिलने के साथ ही, जो भी त्वरित कार्रवाई हो सकती है, उसे वहां के स्थानीय प्रशासन ने की है। यहां पर भी हमारे गृह मंत्रालय और वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा, जितनी त्वरित कार्रवाई हो सकती है, उसे हम लोगों ने किया है। मैं माननीय सदन को इससे अवगत कराना चाहता हूं कि इस समय स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है। इसके बारे में जानकारी प्राप्त होने के बाद यहां से तुरन्त ही एन.डी.आर.एफ. की तीन टीम उत्तराखण्ड के लिए भेजी गयी। साथ ही साथ, एयरफोर्स के तीन एम.आई.-17 हेलिकॉप्टर्स भी वहां भेजे गए हैं। इस समय उनके द्वारा आग बुझाने का काम किया जा रहा है। वहां पर कुछ एक्सपर्ट्स टीम भी भेजी गयी हैं। जिन्हें इन सब चीज़ों में महारत है, जिन्हें कुशलता हासिल है, उन्हें भी वहां पर भेजा गया है। जहां पर आवश्यक होता है, वहां पर वे अपने सुझाव भी देते हैं कि यदि फायर को कंट्रोल करना है तो उसे कैसे किया जा सकता है। वह टीम भी वहां पहुंची हुई है।

अभी कल रात को ही मैंने उत्तराखण्ड प्रशासन से जो जानकारी ली है, तो मुझे यह कहते हुए खुशी भी है कि अब वे पूरी तरह से आश्वस्त हैं कि इसमें चिंता की कोई बात नहीं है और स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है।

कुछ कैजुअल्टीज़, ह्यूमन डेथ की बात कही गयी है। मैंने यह भी पेरीफाई करना चाहा कि आग लगने के कारण क्या कोई ह्यूमन डेथ हुई है या नहीं हुई है, तो स्थानीय प्रशासन अभी इसे कंफर्म नहीं कर रहा है। उसका यह कहना है कि अभी हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते हैं कि आग के कारण चार लोगों की मौत हुई है।

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा : अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

माननीय अध्यक्ष : वैसे यह मुद्दा ऑलरेडी दो-दो बार उठ चुका है। मगर, आप अपनी बात कह सकते हैं।